# हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास

गद्य — जो रचना छन्द, लय, तुकताल आदि से मुक्त हो, वह गद्य है।

## हिन्दी गद्य का स्वरूप एवं विकास

* हिन्दी गद्य के प्राचीन प्रयोग ब्रजभाषा एवं राजस्थानी में मिलते हैं।
* 13वीं शताब्दी के थोड़ा पहले से हिन्दी गद्य का आविर्भाव हुआ।
* गद्य/गद्य ⇒ गद् → बोलना, बतलाना, कहना।

  गद् + यत = गद्य

  (गद् — धातु, यत — प्रत्यय)

## [गद्य साहित्य का काल-विभाजन]

1. पूर्वभारतेन्दु युग/प्राचीन युग — 13वीं शताब्दी से 1868 ई० तक
2. भारतेन्दु युग — सन् - 1868 — 1900 ई० तक
3. द्विवेदी युग — सन् - 1900 से 1922 ई० तक
4. छायावादी/शुक्ल युग — 1922 — 1938 ई० तक
5. शुक्लोत्तर/छायावादोत्तर युग - 1938 — 1947 ई० तक
6. स्वतन्त्र्योत्तर युग — सन् - 1947 — से अबतक

# [प्राचीन युगीन गद्य]

* रचनाएँ —

राउरवेल — चम्पू → रोडा कवि

उक्तिव्यक्ति प्रकरण → दामोदर शर्मा

वर्णरत्नाकर → ज्योतिरीश्वर ठाकुर
↓
मैथिली भाषा
में लिखित व्याकरण ग्रन्थ

⇒ हिन्दी परिवार की भाषाओं में गद्य का सर्वप्रथम उन्मेष — राजस्थानी गद्य में प्राप्त होता है।

* ब्रजभाषा गद्य का सूत्रपात 1400 वि० सं० के आस पास माना जाता है, लेकिन आ० शुक्ल के अनुसार 1457 ई० तक का ही साहित्य उपलब्ध है।

* 17 वीं शती की उपलब्ध रचनाएँ —

- शृंगार रस मण्डन — विट्ठलनाथ
- चौरासी वैष्णवन की वार्ता — } → गोकुलनाथ
- दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता — }
- अगहन महात्म्य, वैशाखमहात्म्य — बैकुण्ठमणि शुक्ल
- सिद्धान्त विचार — ध्रुवदास
- गोरा बादल की कथा — जटमल

# [खड़ीबोली गद्य का विकास]

खड़ी बोली गद्य के चार उन्नायकों में

पंडिताऊपन फारसी का प्रयोग

① मुंशी सदासुखलाल (राय) – सुख सागर

② मुंशी इंशा अल्लाह खाँ – रानी केतकी की कहानी

हास्यप्रधान शै० तड़क भड़क शोखी रंगीनी

फोर्ट विलियम कॉलेज के भाषा मुंशी

③ सदल मिश्र – नासिकेतो पाख्यान → पूर्वीपन

④ पं० लल्लूलाल – प्रेमसागर

अन्य —

- राम प्रसाद निरंजनी – भाषा योगवाशिष्ठ
- पं० दौलत राम – पद्म पुराण का भाषानुवाद

# [भारतीय जागरण]

भारतीय जागरण को देश व्यापी रूप देने में

ब्रह्म समाज – 1820 – राजाराममोहन राय

रामकृष्ण मिशन – 1867 – स्वामी विवेकानन्द

प्रार्थना समाज – 1867 – महादेव गोविन्द रानाडे

आर्य समाज – स्वामी दयानन्द सरस्वती – 1867 ई०

थियोसॉफिकल सोसायटी – 1882 – मैडम ब्लावत्सकी/कर्नल अल्कॉट

जैसी संस्थाओं का योगदान रहा।

# भारतेन्दु युगीन गद्य

1850–1900
1858–1900 ई०
1868–1900
Time

भारतेन्दु – (1850 – 1885 ई०)

इस समय हिन्दी साहित्य की चरम उन्नति हुई।

दो महत्वपूर्ण व्यक्ति —

- राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द – राजा भोज का सपना
- राजा लक्ष्मण सिंह – शकुंतला, रघुवंश, मेघदूत का अनुवाद
  प्रजाहितैषी (पत्रिका)

GCC

Youtube

## भारतेन्दु के सहयोगी

बालकृष्ण भट्ट – 'हिन्दी प्रदीप' (प०), कलिराज की सभा
कार्तिक प्रसाद खत्री (प०) हिन्दी दीप्ति प्रकाश
पं० प्रतापनारायण मिश्र – ब्राह्मण (प०)
राधाचरण गोस्वामी – अमरसिंह राठौर,
बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन – आनन्द कादम्बिनी (प०)
ठाकुर जगमोहन सिंह – श्यामा स्वप्न, श्यामा सरोजिनी
राधाकृष्णदास – दुःखिनी बाला, महाराणा प्रताप, निस्सहाय हिन्दू
किशोरी लाल गोस्वामी – इन्दुमती, प्रणयिनी परिणय, मयंक मंजरी

भारतेन्दु (पत्रिकाएँ) →
- बालाबोधिनी
- हरिश्चन्द्र चन्द्रिका / मैगजीन
- कविवचन सुधा

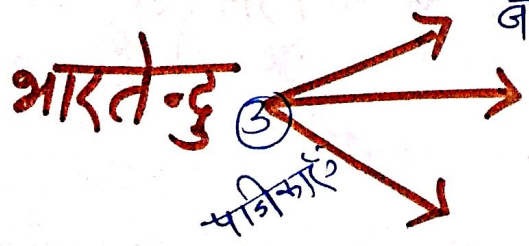

# अन्य लेखक रचनाएँ —

भारतेन्दु के नाटक — वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति

नाटक
- विषस्य विषमौषधम्
- भारत दुर्दशा
- नील देवी
- अंधेर नगरी
- सती प्रताप

अन्य — कश्मीर कुसुम
- बादशाह दर्पण
- सत्य हरिश्चन्द्र
- जयदेव का जीवन वृत्त
- सरयू पार की यात्रा

Note — 'नहुष' नाटक
↓
'गोपालचन्द्र गिरिधरदास'